Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 15 Issue 01, January- 2020
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आधुनिक शिक्षा प्रणाली एवम् गुरुकुल शिक्षा पद्धति : स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों का एक अध्ययन

निताशा जुन, एसोसिएट प्रोफसर,
इतिहास, द्रोणाचार्य राजकीय महाविद्यालय, गुरूग्राम, हरियाणा

शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान एक प्रसिद्ध तथ्य हैं कि सरकार के बाद सबसे अधिक शिक्षण संस्थाएं आर्य समाज की देन है। स्वामी जी ने कहा है स्वामी जी ने कहा है – ‘‘जिससे मनुष्य विद्या आदि शुभ गुणों की प्राप्ति और अविद्या आदि दोषों को छोड़कर सदा आनंदित हो, वह शिक्षा कहलाती है।[1] इस प्रकार स्वामी जी विद्या की प्राप्ति, अविद्या (अज्ञान) का त्याग और उसका परिणाम – ‘आनंद को शिक्षा का उद्देश्य मानते थेद।[2] पदार्थ का यथावत् रूप जानना उससे अपने व दूसरों को सुखी बनाना, वह विद्या है, और जो कुछ इसके विपरीत है, वह अविद्या है[2] इसलिए स्वामी जी ने भारत की निर्धन और अशिक्षित जनता की अधोगति से दुःखी होकर ‘सत्यार्थ प्रकाश’ के ‘तृतीय समुल्लास’ में अनिवार्य शिक्षा का विचार व्यक्त किया है।[3] वह कहते थे कि विद्या ऐसा धन है, जिसे न चोर चुरा सकता है और नही कोई भाई बांट सकता है। राजा केवल अपने देश में ही पूजा जाता है परन्तु विद्वान सर्वत्र पूजा जाता हैं। उसके डी.ए.वी. स्कूल, कालेज, कन्या विद्यालय और गुरुकुल सारे उत्तरी भारत में फैले है जिसमें से सर्वप्रमुख इनकी गुरुकुल पद्धति मानी जाती है।[4]

‘गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की कुछ विशेषताओं का निर्देश करने से पूर्व वर्तमान शिक्षा प्रणाली और उसके प्रवर्तक के शब्दों में उसके उद्देश्य का निर्देश कर देना आवश्यक प्रतीत होता है। लार्ड मैकालों ने सन 1835 में इस अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली को प्रचलित करते हुए इसका उद्देश्य तथा संभावित परिणाम निम्न शब्दों में प्रकट किया था।[5]

‘‘अंग्रेजी शिक्षा ऐसे व्यक्तियों के वर्ग को तैयार करेगी जो रक्त और रंग में तो भारतीय होंगे किन्तु जिनकी रूचियां, सम्मतियां, आचार, विचारदि सब अंग्रेजों जैसा होगा।’’ सीधे शब्दों में इसका भाव यों प्रकट किया जा सकता है कि काली चमड़ी के अंग्रेजों को तैयार करना, इस अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को प्रवर्तक **लार्ड मैकाले** के विचार में मुख्य उद्देश्य था।[6]

अमेरिका के सुप्रसिद्ध शिक्षा वैज्ञानिक **‘मि. मायर्नफेल्प्स’** ने कई महीने तक भारत के प्रायः सब शिक्षणालयों का निरीक्षण करके इस विषयक लेखमाला में वर्तमान अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का उद्देश्य **‘To turn good Indians into poor English men’** इस प्रकार के शब्दों में प्रकट किया था। जिनका भाव है **‘अच्छे भारतीयों को गरीब अंग्रेजों के रूप में परिणत करना।’**[7]

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 15 Issue 01, January- 2020
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इंग्लैंड के भूतपूर्व प्राइम मिनिस्टर **रैम्जे मैक्डानल्ड** ने भी सन 1914 में गुरूकुल के निरीक्षण के पश्चात वर्तमान शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य **'मायर्न फेल्प्स'** के उपर्युक्त शब्दों में दोहराया।''[8]

वर्तमान समय के सुप्रसिद्ध शिक्षा वैज्ञानिक और दार्शनिक 'डाक्टर सर राधाकृष्णन ने **''All Bengal College and University Teachers' Association''** ने कहा कि जहां सरकारी शिक्षा पद्धति के कुछ अंश तक कुशल किन्तु दब्बु यंत्र समान व्यक्तियों को तैयार करने में सफल हुई हैं, वहां इसने एक स्वतंत्र राष्ट्र के आत्मसम्मान युक्त नागरिक बनाने में कोई सहायता नहीं की। सरकारी विद्यालयों में केवल भारतीय इतिहास हम पर केवल यह प्रभाव जमाने के लिए पढ़ाया जाता है कि भारत संघ असफल रहा है।[9]

ब्रिटिशकाल में स्कूलों, कॉलेजों में प्रचलित वर्तमान शिक्षा प्रणाली पूर्णत: दूषित थी,[10] इन संस्थाओं में शिक्षा का अर्थ केवल साक्षरता अर्थात reading and writing समझा जाता था। ऐसा प्रतीत होता है कि अनुभवहीन और अल्पशिक्षित समाज ने इन दो उद्देश्यों के साथ तीसरा उद्देश्य rasitering, अवारा फिरना और कुचेष्टायें भी जोड़ लिया था।[11] यदि गंभीरता, उदारता और निष्पक्षता से वर्तमान शिक्षा की पद्धति और इसके परिणामों का विश्लेषण किया जाए तो चिरकाल के अनुभव के आधार पर हम शीघ्र ही समझ लेंगे कि इस शिक्षा से जहां कतिपय लाभ हुए थे, वहां हानियां ज्यादा हुई थी।[12]

आधुनिक शिक्षा युवकों और युवतियों के अंदर केवल डिप्लोमों और डिग्रियों की लालसा उत्पन्न करती थी और छात्र वर्ग को आजीविकोपार्जन के योग्य नहीं बनाती थी, इसी का दुष्परिणाम था कि हमारे बच्चे इन उपाधियों के पीछे अपनी जीवन शक्ति क्षीण कर देने के पश्चात भी सम्मानपूर्वक और सुगमता से अपना जीवन निर्वाह नही कर सकते थे। इसके लिए नौकरियों की तलाश में भटकते हुए अपने बहुमूल्य जीवन को बिता देते थे।[13]

उस समय की शिक्षा प्रणाली सदाचार व ब्रह्मचर्यादि पर कोई ध्यान नहीं देती थी और न ही उसमें विद्यार्थियों के मन में प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम उत्पन्न करने का कोई प्रयत्न किया जाता था।[14] धार्मिक शिक्षा के अभाव में विद्यार्थी प्राय: अज्ञान में रहते थे और इन विषयों में पक्षपात पूर्ण पाश्चात्य लेखकों के विचार ही उनके सामने पाठ्य पुस्तकों द्वारा रखे जाते थे जो भारतीय संस्कृति के प्रति घृणा उत्पन्न कर देते थे। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होने के कारण विद्यार्थियों को कठिन विषयों को समझने में दुगुना समय लगता था लेकिन वो फिर भी इसे भली भांति समझ नहीं पाते थे और इस प्रकार जैसे-तैसे घोटकर परीक्षा में पास होने का प्रयत्न करते थे और इस कारण उनकी मौलिकता नष्ट हो जाती थी।[15] इस विषय में भारत के वायसराय **'लार्ड लिटन'** ने जनवरी सन् 1929 में यूनिवर्सिटी लंदन में शिक्षा सम्मेलन के प्रधान पद से भाषण देते हुए कहा था, **'क्या हम लोग इस बात को अनुभव करते है कि भारत में प्रत्येक विषय की शिक्षा अंग्रेजी माध्यम द्वारा दी जाती है। इसके कारण विद्यार्थियों**

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 15 Issue 01, January- 2020
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

के दिमागों पर इसका बड़ा प्रभाव दबाव पड़ता है और शिक्षा से जितना लाभ उठा सकते थे उसमें न्यूनता आ जाती है। हम इस बात का अनुभव इस बात से कर सकते है हम इसकी कल्पना करे कि यदि इंग्लैंड में इतिहास, भूगोल, गणित इत्यादि सब विषय जापानी में पढ़ाए जाऐं।[16]

देश के एक विख्यात राष्ट्रीय कवि ने व्यंग्यपूर्ण मार्मिक शब्दों में हमें चेताने का यत्न किया है कि **''क्या कहे अहबाब क्या करें नुमायां कर गये बी.ए. की नौकरी मिली, पैंशन भी ली और मर गये।''**[17]

यह शिक्षा युवक वर्ग को सुख प्रिय, आलसी व कोमल बनाती थी, परिश्रमात्मक जीवन की क्षमता हमसे छीन लेती थी। कठोर उत्तरदायित्व पूर्ण अथवा कार्य करने वाला श्रमात्मक, स्वाभाव नहीं रहने देती थी।[18] परिणामस्वरूप मनुष्य दुर्बल व सुखार्थी होने के कारण संघर्ष से जी चुराता था और इसी कारण व शिल्प संबंधी कार्यों से संकोच करता था और इसी कारण उत्तरोत्तर निर्बल बनाने वाले व्यवसायों की ओर प्रवृत होता था, और परतंत्रता में प्रसन्न रहता था।''[19]

वह शिक्षा छात्रों के जीवन को खर्चीला बनाती थी। खर्चीला जीवन बिताने वाला मनुष्य अपना ही निर्वाह नहीं कर सकता था। अत: उसका रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा का स्तर तो ऊंचा हो जाता था परन्तु चरित्र संबंधी स्तर ऊंचा नही उठता था। दीन-दुखियों व अधिकारियों के लिए त्याग की भावनाएं इसमें कैसे विकसित होती। ऐसे लोग विलास प्रिय होने के कारण अपनी खर्चीली मनोवृतियों की पूर्ति, अर्थ दूसरों के साथ धोखा और अन्याय करना नैतिक पतन नहीं समझते थे।''[20] आज इस फिजुलखर्ची व सुख प्रियता का परिणाम इस रूप में दीख रहा है कि इस कृषि प्रधान देश के परिश्रमी व तपस्वी एवं वीर किसानों के बच्चे बूशर्ट और कीमती लांग बूट पहन कर हल चलाते ओर थोड़ा काम करने पर हांपने लगते हैं।[21] दुर्भाग्यवशात पढ़े लिखे धनिक वर्ग के रहन-सहन, खान-पान व वेशभूषा का प्रभाव सर्वसाधारण जनता पर शीघ्रता से पड़ता था। संपूर्ण कुरीतियों का स्त्रोत आज प्राय: वह पठित समाज बनने लगा था जिसकी ओर से कल्याणात्मक पावन नेतृत्व की आशा थी।[22]

शिक्षा खर्चीली मनोवृति और जीवन की संहारिका होने के साथ-साथ इतनी मंहगी थी कि इसे निर्धनों की पहुंच से दूर कह जाने लगा।[23] इस विशाल देश की ग्रामीण जनता जिसके विषय में यह कहा जाता था। 'Heart of the nation lives in the villages' अपने बच्चों की बढ़ती हुई फीसों की राशियां देने में असमर्थ होने के कारण उनकी उंची शिक्षा दिलाने से वंचित रहती थी, तब लाखों बच्चे इसलिए निरक्षर रह जाते थे, क्योंकि संरक्षक हाई स्कूल या कालेज की फीसें नहीं दे सकते थे।[24] उस समय की आधुनिक शिक्षा में जीवन निर्माण की योग्यता एवं क्षमता बहुत ही कम पायी जाती थी। इस प्रकार के शब्द राष्ट्रपति **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी** ने आगरा कालेज में उपाधि वितरण पर बलपूर्वक कहे थे कि :-

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 15 Issue 01, January- 2020
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

''जैसे-जैसे गगनचुंबी अटालिकाओं वाले कालेजों एवं शिक्षणालयों की वृद्धि हो रही है वैसे-वैसे हम मानवता से गिर रहे है। इसके अतिरिक्त हमारे पश्चिमी गुरूओं और उनके चेलों व अदूरदर्शी लेखकों ने इन विद्यालय के कोर्सों में ऐसा विष भर दिया है कि हमारा छात्र वर्ग जरा संभलते ही नास्तिकता अश्रद्धा, उदण्डता का आखेट बनकर भारतीय संस्कृति के उज्जवल स्वरूप से ही घृणा करने लग जाता है। अत: यह शिक्षा जहां संस्कृति से वैभुख्योत्पन्न करती है। वहां अभद्र, भारतीय विदेशी धारणाओं विश्वासों व आचार व्यवहार की छाप मस्तिष्कों पर लगा कर दिमागी गुलामी के पक्षों को भी सुदृढ़ बनाती है।''[25]

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने ब्रिटिश कालीन शिक्षा एवं मैकाले की शिक्षा पद्धति को एक **'विषैला इंजैक्शन'** बताया है और इस इंजैक्शन के असर को उतारने के लिए **'Antidote'** के रुप में अगर किसी राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली ने जन्म लिया तो वह एकमात्र **'गुरुकुल शिक्षा प्रणाली'** थी।[26] ब्रिटिश साम्राज्य के भूतपूर्व प्रधानमंत्री **'श्रीयुत मैक्डानल्ड'** ने गुरुकुल पर अपनी सहमति देते हुए कहा था कि **''गुरुकुल आर्य संस्कृति की भावना को फैलाने वाली एक धार्मिक संस्था है। इस संस्था में शिक्षणालय तथा मठ इन दोनों तत्वों का संगम है और भारतीय शिक्षण में यह एक असाधारण क्रांति है।''**[27]

स्वामी जी ने गुरुकुल शिक्षा की प्रणाली की महता से जनता को परिचित कराया। परिणामस्वरूप संस्कृत पाठशालाओं व गुरूकुल का जन्म हुआ।''[28] **''कविन्द्र रवीन्द्र ठाकुर''** आश्रम शिक्षा प्रणाली के बारे में आदर्श शब्दों में **'My School'** नामक निबंध में लिखते है:-

"It must be an asharam when men have gathered for the highest end of life in the peace of nature, when life is not merely meditative, but fully aware in its activities, when boys minds are hot being perpetually drilled into believing that the ideal of the self the is the true ideal for them to accept when they are hidden to relies man's world God's kingdom. To whose citizens they have to aspire where the sunrise and sunset, the silent glory of start are not daily ignored. When nature festivities of flowers and fruit had their joyous recognition town man and when the young and the old, teachers and the student sit at the same table to practice of their daily food and the food of their eternal life."

उनके अनुसार यह हमारी शिक्षा का आदर्श होना चाहिए, आधुनिक शिक्षा के मोह जाल से मुक्त होकर हमें पुरातन आश्रम प्रणाली तथा उसी के जैसे आदर्श जीवन की आवश्यकता है, जो गुरूकुल के बिना असंभव है।[29]

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 15 Issue 01, January- 2020
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अब विचारणीय रह जाते है गुरुकुल शिक्षा पद्धति के मूलभूत सिद्धान्त अगर हम गहराई से देखें तो स्पष्ट हो जाएगा कि ''गुरुकुल'' शब्द में ही गुरुकुल शिक्षा पद्धति के मूलभूत सिद्धान्त निहित है।''[30] **''गुरु''** तथा **''कुल''** दो शब्दों से बना है।[31] इसके अतिरिक्त इस प्रणाली में एक तीसरा शब्द है **''शिष्य''** – वह व्यक्ति जिसके लिए शिक्षा पद्धति का निर्माण हुआ है।''[32] और एक चौथा शब्द है **''आश्रम''**।[33] इन चार शब्दों पर विचार करने से गुरूकुल शिक्षा पद्धति के मूलभूत सिद्धान्त स्पष्ट हो जाते है।[34]

गुरु – इस पद्धति का पहला शब्द है ''गुरु'' । संस्कृत में प्रचलित एक शब्द है, **''गुरुत्वाकर्षण''**। इस शब्द का अर्थ है कि गुरु (भारी) वस्तु अपने से हल्की वस्तु को अपनी तरफ खींच लेती है। उदाहरणार्थ सब वस्तुएं बरबस पृथ्वी की तरफ खींच आती है। गुरु का अर्थ है – **''वह व्यक्ति जो अपने गुणों से अपनी विद्या से इतना भारी हो कि अल्प ज्ञान वाले सब लोग उसकी तरफ खीचें चले आए।''**[35] गुरुकुल शिक्षा पद्धति का पहला मूल सूत्र है। इसमें विद्या का दान दिया जाता है। विद्या बेची नही जाती। गुरु बनने के लिए पैसे का महत्व कम नहीं परन्तु विद्या देते हुए ऐसा दृष्टिकोण तो होना चाहिए कि वह विद्या का अगाध सागर बनाकर छात्रों की पिपासा को मिटाने के लिए अपनी तरफ आकर्षित कर सके। यह गुरुकुल शिक्षा पद्धति का पहला मूल सिद्धान्त है।[36]

कुल:– इस पद्धति का दूसरा शब्द है – **''कुल''**। कुल का अर्थ है – **परिवार।** गुरुकुल उस शिक्षा पद्धति को कहते हैं जिसमें गुरू तथा शिष्य इस भावना से एक ही जगह रहते हैं, मानों वे सब एक परिवार के अंग हो। गुरुकुल शिक्षा पद्धति की ऐसी विशेषता, अन्य शिक्षा पद्धतियों में नही पाई जाती।[37] गुरुकुल का ''कुल'' प्रत्येक मानव को विश्व का एक ही स्तर का नागरिक बनाने में एक कड़ी है। **'माता–पिता के कुल से आचार्य, आचार्य के कुल से समाज, समाज के कुल से देश, देश के कुल से विश्व के कुल में आगे–आगे बढ़ते जाना'** – गुरुकुल में **''कुल''** शब्द का यही अर्थ है।[38]

शिष्य: गुरुकुल शिक्षा पद्धति का तीसरा शब्द है **''शिष्य''**। शिष्य शब्द, शास् अनुशासने धातु से बना है – **डिसिप्लीन**।[39] शिष्य का मूल कर्तव्य है **अनुशासन में रहना**। गुरुकुल शिक्षा पद्धति का मूल सिद्धान्त ही अनुशासन प्रियता है, इसीलिए विद्यार्थी को 'शिष्य' संज्ञा दी गई। जो विद्यार्थी जीवन में अनुशासन न सीखें, वे समाज का अंग बनने पर कैसे अनुशासन में रह सकते है।[40]

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 15 Issue 01, January- 2020
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आश्रम:- विद्यार्थी को गुरुकुलाश्रम में रहना होता है, इसलिए इस पद्धति का चौथा शब्द है – **''आश्रम''**।[41] वैदिक संस्कृति में मानव जीवन चार आश्रमों में बंटा है। ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम व संयासाश्रम। गुरुकुल पद्धति का कहना तो यह है कि ब्रह्मचर्याश्रम से और तप का जीवन बिताने से मृत्यु पर विजय पाई जा सकती है। **'ब्रह्मचर्येण तपसा देवाम् मृत्युमपाध्नत।'** ब्रह्मचर्य और तप का जीवन माता-पिता के साथ गृहस्थ में रहने से नहीं, बल्कि आश्रम में रहकर ही बिताया जा सकता है।[42]

स्वामी जी कहते थे कि **''वर्तमान शिक्षा प्रणाली मानसिक गुलाम पैदा करने की मशीन मात्र थी और मानसिक उन्नति के बिना किसी प्रकार की उन्नति संभव नही है, इसलिए गुरुकुल ही एक ऐसी संस्था है जो मनुष्य को मानसिक रुप से मजबूत बना सके।''**[43] गुरुकुल भारत और भविष्य के बीच में विश्वास पैदा करता है, जो कि कुछ ही शिक्षण संस्थाएं एवं विश्वविद्यालय करते है।[44] भारतीय संस्कृति आज उसी जीवन शक्ति के साथ जिंदा है, जैसी की उस समय थी, जब **मिश्र** और **ईरान** की संस्कृति पैदा भी नहीं हुई थी।[45] शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल एक महत्वपूर्ण परीक्षण है।[46] ऋषि दयानंद द्वारा उत्पन्न की हुई आत्म अभिव्यक्ति की भावना ही इसका मूल है। इसे **ऋषि दयानंद** ने **आत्मा, स्वामी श्रद्धानंद** ने **आकृति** तथा **आचार्य रामदेव** ने **बाह्य आवरण** प्रदान किया है।[47] ऋषि के आदर्श को उनके अनुयायियों ने कार्यान्वित किया और फलस्वरूप यह संस्था आज आर्य समाज के लिए जीवन शक्ति बनी हुई है। यदि आर्य समाज के लिए गुरुकुल कुछ विशेषता रखता है तो शिक्षा संबंधी आत्म निर्भरता के क्षेत्र में यह उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि यदि कृत कार्य हुआ तो भारत की शिक्षा संबंधी भावी पद्धति के प्रश्न को भारतीय परंपरा के अनुसार यही हल कर सकेगा।[48]

- गुरुकुल पत्रिका, 1982
- आर्योदय पत्रिका, जनवरी–दिसम्बर, 1966
- आर्य हैरिटेज पत्रिका, 1984
- आर्य जगत पत्रिका, 1964
- गुरुकुल पत्रिका, 1936–1938
- आर्य मार्तण्ड पत्रिका, 1975–1980
- गुरुकुल पत्रिका, मई–मार्च, 1938–1940
- गुरुकुल पत्रिका, 1936–1938
- आर्य जीवन पत्रिका, 1959
- आर्य पत्रिका, अप्रैल–अगस्त, 1952
- आर्य महिला पत्रिका, 1960
- आर्य पत्रिका, 1933
- भास्कर मासिक पत्रिका, 1914
- आर्योदय पत्रिका, 1964
- आर्योदय पत्रिका, 1964
- गुरुकुल पत्रिका, 1936–1938
- आर्य पत्रिका, जनवरी–दिसम्बर, 1945
- आर्य पत्रिका, अप्रैल–अगस्त, 1952
- गुरुकुल पत्रिका, अप्रैल–जुलाई, 1940–1941
- गुरुकुल मासिक पत्रिका, मई–मार्च, 1938–1940
- आर्य जगत पत्रिका, 1984
- भास्कर मासिक पत्रिका, 1915
- गुरुकुल मासिक पत्रिका, मई–मार्च, 1938–1940
- आर्य–पत्रिका, अप्रैल–अगस्त, 1952
- गुरुकुल पत्रिका, जुलाई–अगस्त, 1938
- आर्योदय पत्रिका, 1960
- गुरुकुल पत्रिका, अप्रैल–जुलाई, 1940–41
- आर्योदय पत्रिका, 1960
- आर्य पत्रिका, जनवरी–दिसम्बर, 1945
- गुरुकुल पत्रिका, दिसम्बर, 1974–75
- आर्यभानू पत्रिका, 1917
- आर्यजगत पत्रिका, 1984

- आर्य मित्र पत्रिका, 1984
- भास्कर मासिक पत्रिका, 1918
- आर्य पत्रिका, 1933
- आर्य पत्रिका, 1953–1954
- भास्कर मासिक पत्रिका, 1915
- गुरुकुल पत्रिका, 1976
- आर्योदय पत्रिका, दिसम्बर, 1966
- आर्योदय पत्रिका, 1963
- आर्य पत्रिका, अप्रैल, 1953–1954
- आर्य पत्रिका, दिसम्बर–जनवरी, 1950